ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हरिहर काका

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : ५
पाठ का नाम : हरिहर काका
PPT-3

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

विस्फोट - फूट कर बाहर निकलना
आगमन - आने पर
उपलक्ष्य - संकेत
सराहना - प्रशंसा
निश्चिंत - बेफिक्र

लेखक कहते हैं कि अगर कभी हरिहर काका के शरीर की स्थिति या मन की स्थिति ठीक नहीं होती तो समझिए हरिहर काका पर मुसीबतों का पहाड़ ही गिर जाता। क्योंकि इतने बड़े परिवार के रहते हुए भी हरिहर काका को कोई पानी भी नहीं पूछता था। सभी अपने-अपने कामों को करने में व्यस्त रहते थे। बच्चे या तो अपनी पढ़ाई कर रहे होते थे या उछल-कूद कर रहे होते थे। परिवार के सभी मर्द खेतों में गए होते थे। औरतें तो हरिहर काका का हाल भी पूछने नहीं आती थी। बरामदे के कमरे में पड़े हुए हरिहर काका को अगर किसी चीज़ की जरूरत होती तो उन्हें खुद ही उठना पड़ता। ऐसे समय में हरिहर काका को अपनी दोनों पत्नियों की याद आ जाती और उनकी आँखें भर जाती। लेखक के अनुसार हरिहर काका का जो भाइयों के परिवार के लिए प्यार था उसके कम होने की शुरुआत उनके साथ होने वाले इस तरह के व्यवहार से ही हुई थी । लेखक कहते हैं कि हरिहर काका सब कुछ सहन कर रहे थे, परन्तु एक दिन सब कुछ फूट कर बाहर आ गया। उस दिन हरिहर काका की सहन-शक्ति टूट गई। उस दिन उनका जो भतीजा शहर में क्लर्की की नौकरी करता है, वह और उसका एक दोस्त गाँव आए हुए थे। उन्हीं के आने की ख़ुशी में दो-तीन तरह की सब्ज़ियाँ, बजके, चटनी, रायता और भी बहुत कुछ बना था।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

बीमारी से कुछ समय पहले ही ठीक हुए हरिहर काका का भी कुछ स्वादिष्ट खाना खाने का मन था। हरिहर काका मन-ही-मन भतीजे और उसके दोस्त की प्रशंसा करने लगे क्योंकि उनकी वजह से ही आज हरिहर काका को स्वादिष्ट खाना खाने को मिलने वाला था। लेकिन जैसा हरिहर काका ने सोचा था बात बिलकुल उसके उलटी हुई। सब लोगों ने खाना खा लिया और हरिहर काका को कोई पूछने तक नहीं आया। उनके तीनों भाई खाना खा कर खलियान में चले गए क्योंकि गेहूँ और धान को अलग करने का काम चल रहा थे। वे इस बात से बेख़बर थे और सोच रहे थे कि हरिहर काका को तो पहले ही खाना दे दिया गया होगा।

8.अंत में हरिहर काका ने स्वयं दालान----------अपने साथ ठाकुरबारी पर लेते आए।

विराजमान - उपस्थित
हुमाध - हवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री
कान खड़े होना - सावधान होना
तत्क्षण - उसी समय
संयोग - किस्मत

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि जब हरिहर काका को किसी ने खाना खाने के लिए नहीं पूछा तो वे खुद ही बरामदे वाले कमरे से निकल कर हवेली के अंदर गए। तब हरिहर काका के छोटे भाई कि पत्नी ने रुखा-सूखा खाना लाकर उनके सामने परोस दिया। जिसमें भात, दाल और अचार ही था। बस फिर क्या था, ऐसा खाना देखकर हरिहर काका को गुस्सा आ गया और उन्होंने थाली को उठाकर बीच आँगन में फेंक दिया। थाली आँगन में झनकने की आवाज़ के साथ बहुत जोर से गिरी। भात गिर कर आँगन में बिखर गया। गाँव के अलग-अलग घरों में बैठी लड़कियाँ और बहुएँ आवाज को सुनकर एक साथ बाहर आ गईं। हरिहर काका गुस्से में बरामदे की ओर चल पड़े और जोर-जोर से बोल रहे थे कि उनके भाई की पत्नियाँ क्या यह सोचती हैं कि वे उन्हें मुफ्त में खाना खिला रही हैं। अगर वे ऐसा कुछ सोचती हैं तो वे अपने मन से ऐसी बातें निकाल दें। हरिहर काका कह रहे थे कि उनके खेत में उगने वाला अनाज भी इसी घर में आता है। और अगर वो अलग रहें तो वो दो-चार नौकर रख कर आराम से अपनी जिंदगी काट सकते हैं, उनको कोई कमी नहीं होगी। वे अनाथ और बेसहारा नहीं हैं क्योंकि जब तक उनके पास धन है वे किसी को भी अपना बना सकते हैं। हरिहर काका कह रहे थे कि उनके भाई का परिवार उनके पैसों पर ही तो मौज करता है। लेकिन अब हरिहर काका सबसे उनके साथ ऐसा दुर्व्यवहार करने के लिए बदला लेने की बात कर रहे थे, और भी वे ना जाने क्या-क्या बोल रहे थे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि जिस समय हरिहर काका गुस्से में सबको बातें सूना रहे थे, उस समय देव-स्थान के पुजारी जी उनके बरामदे में ही उपस्थित थे। वे उनके घर साल में होने वाले हवन के लिए लगने वाली सामग्री के लिए घी और शकील लेने के लिए आए थे। पुजारी जी ने वहाँ से लौटकर महंत जी को सारी बातें बहुत ही विस्तार से सुनाई। महंत जी सावधान हो गए। उन्हें लग रहा था कि यह दिन बहुत ही ज्यादा अच्छा है। उस दिन का ऐसे ही बीत जाना उन्होंने सही नहीं समझा। उन्होंने तुरंत टिका-तिलक लगाया, अपने कंधे पर राम नाम लिखी चादर को डाला और देव-स्थान से निकल कर चल पड़े। उनकी किस्मत अच्छी थी। हरिहर काका के बरामदे तक नहीं जाना पड़ा। उन्हें हरिहर काका रास्ते में ही मिल गए थे। क्योंकि हरिहर काका गुस्से में घर से निकल कर खलियान की ओर जा रहे थे, लेकिन महंत जी ने उन्हें रास्ते में ही रोक दिया और खलियान की ओर नहीं जाने दिया। महंत जी हरिहर काका को अपने साथ देव-स्थान ले आए।

9.फिर एकांत कमरे में----------इसकी राह मैं तुम्हें बता रहा हूँ.....।"

एकांत - खाली
स्वार्थ - अपना मतलब
संकोच – झिझक
वैकुंठ - स्वर्ग
कीर्ति - प्रसिद्धि /ख्याति
पाँव पखारना - पाँव धोना
अकारथ – अकारण

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि महंत जी हरिहर काका को एक खाली कमरे में ले गए और बहुत ही प्यार से समझाने लगे कि इस दुनिया में कोई किसी का नहीं है। इस दुनिया में लालच और संपत्ति का झूठा जाल है। महंत हरिहर काका को कहता है कि उसे वे धर्म से जुड़े हुए व्यक्ति लगते हैं। उसे समझ में नहीं आ रहा कि हरिहर काका इतने समझदार होते हुए भी ऐसे बंधन में कैसे फँस गए। महंत हरिहर काका को भगवान में आस्था लगाने को कहता है क्योंकि महंत के अनुसार भगवान के सिवाय इस दुनिया में कोई अपना नहीं है। पत्नी, बेटे, भाई-बंधु सब केवल अपने मतलब के लिए ही साथ में होते हैं। जिस दिन उन्हें लगेगा कि उनका मतलब पूरा नहीं हो रहा है तो वे बात तक नहीं करेंगे। इसीलिए तो बड़े-बड़े ज्ञानी, संत, महात्मा भगवान के अलावा किसी और से प्यार नहीं करते। महंत हरिहर काका से कहता है कि उनके हिस्से में तो पंद्रह बीघे खेत हैं। जिसके कारण उनके भाइयों का परिवार उनसे जुड़ा हुआ है। किसी दिन अगर हरिहर काका यह कह दें कि वे अपने खेत किसी और के नाम लिख रहे हैं तो वे लोग तो उनसे बात करना भी बंद कर देंगे। खून के रिश्ते ख़त्म हो जायेंगे। महंत हरिहर काका से कहता है कि ये उनके भले की है और वह बहुत दिनों से उनसे कहना चाहता था लेकिन झिझक के कारण नहीं बोल पाया। महंत हरिहर काका से कहता है कि उनके हिस्से में जितने खेत हैं वे उनको भगवान के नाम लिख दें। ऐसा करने से उन्हें सीधे स्वर्ग की प्राप्ति होगी। तीनों लोकों में उनकी प्रसिद्धि का ही गुणगान होगा। जब तक इस दुनिया में चाँद-सूरज रहेंगे, तब तक लोग उन्हें याद किया करेंगे। भगवान के नाम पर अपनी सारी जमीन को लिख देना उनके जीवन का महादान कहलाया जाएगा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

साधु-संत भी उनके पाँव धोएंगें। सभी उनकी प्रशंसा और उनका गुणगान करेंगे। उनका जीवन सफल हो जाएगा। महंत हरिहर काका से कहता है कि वे अपनी बाकी की जिंदगी देव-स्थान पर गुजार सकते हैं। वहाँ पर उन्हें कभी भी किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं होगी। कोई एक चीज़ माँगने पर चार चीज़ें रख दी जाएगी। वहाँ पर उनका बहुत आदर-सत्कार किया जाएगा। भगवान की पूजा के साथ-साथ हरिहर काका की भी पूजा की जाएगी। महंत हरिहर काका से कहता है कि उनके भाई का परिवार उनके लिए कुछ भी नहीं करेगा। महंत यह भी कहता है कि पता नहीं हरिहर काका ने पिछले जन्म में कौन से ऐसे पाप किये थे जिसके कारण उनकी दोनों पत्नियाँ मृत्यु से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो गई और ना ही वे औलाद का सुख हासिल कर पाए। महंत हरिहर काका को कहता है कि वे अपना जीवन अकारण ही ख़राब न करें। अगर वे भगवान को एक चीज़ देंगे तो भगवान उन्हें दस चीज़ें वापिस देंगे। महंत हरिहर काका से कहता है कि वह जमीन उसके अपने लिए तो नहीं माँग रहा, वह तो सिर्फ हरिहर काका को रास्ता दिखा रहा है ताकि हरिहर काका के लोक और परलोक दोनों सुख में बीते।

10.हरिहर देर तक महंत जी की बातें सुनते रहे----------इसलिए ठाकुरबारी में चहल-पहल शुरू हो गई।

हड़प लेना - बेईमानी से ले लेना
प्रतिक्रिया - प्रतिकार / बदला / क्रिया के विरोध में होनेवाली घटना
परिवर्तित - बदला हुआ
इंतज़ाम - प्रबंध

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि जब महंत हरिहर काका को समझा रहे थे, तो हरिहर काका बहुत देर तक महंत की बातों को सुनते रहे। महंत की बातें हरिहर काका के मन में बैठती जा रही थी और वे सोच रहे थे कि महंत सही तो कह रहे हैं। इस दुनिया में कोई किसी का नहीं है। क्योंकि वे अपने हिस्से के पंद्रह बीघे खेत की फसल अपने भाइयों के परिवार को दे देते हैं, उसके बाद भी वहाँ उनका ध्यान नहीं रखा जाता। हरिहर काका सोचने लगे अगर वे कुछ भी न दें फिर उनका क्या होगा। उनके जीते जी ही उनका कोई महत्व नहीं रह गया है, तो मरने के बाद कोई उन्हें याद नहीं करेगा । उनके खेतों पर बेईमानी से कब्ज़ा कर लिया जाएगा। हरिहर काका सोचने लगे कि अगर वे अपनी जमीन भगवान के नाम लिख दें तो पीढ़ियों तक उनको याद रखा जायेगा। अब तक के जीवन में उन्होंने भगवान के लिए कुछ भी नहीं किया। अपने अंतिम समय में वे कुछ अच्छा तो कर ही सकते हैं। लेखक कहते हैं कि हरिहर काका ये सब सोच तो रहे थे परन्तु वे कुछ बोल नहीं पा रहे थे। वे दूसरी ओर यह भी सोच रहे थे कि भाई का परिवार भी तो अपना ही परिवार होता है। अपनी जमीन उनको न देकर देव-स्थान के नाम लिख देना, उनके साथ भी तो धोखा और विश्वासघात होगा। जब महंत जी हरिहर काका को समझा कर रुके तो वे हरिहर काका की ओर देखने लगे क्योंकि वे जानना चाहते थे कि उनके समझाने का हरिहर काका पर क्या प्रभाव पड़ा है। हरिहर काका ने अपने मुँह से तो कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु हरिहर काका के चेहरे की बदलती हुई भावनाओं को महंत जी आसानी से पहचान गए। महंत जी जो चाहते थे वह हो रहा था इसलिए वह बहुत खुश थे। वे जानते थे कि उन्होंने सही जगह और सही समय पर वार किया है। फिर महंत जी ने उसी समय दो सेवकों को बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि एक साफ़-सुथरे कमरे में पलंग पर बिस्तरा लगाकर हरिहर काका के आराम का प्रबंध करें। महंत जी के कहने में जितना समय लगा था सेवकों ने उससे भी कम समय में ही काम कर दिया और हरिहर काका के मना करने के बाद भी उन्हें एक सुन्दर कमरे में पलंग पर लेटाया गया। और महंत जी ने पुजारी को यह समझा दिया था कि हरिहर काका के लिए विशेष रूप से भोजन की व्यवस्था करवाए क्योंकि हरिहर काका को महंत जी एक विशेष उद्देश्य से देव-स्थान में ले कर आए थे, इसलिए देव-स्थान में चहल-पहल शुरू हो गई।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

11.इधर शाम को हरिहर काका के भाई----------जीवन में उन्होंने नहीं पाया था।

चिंतामग्न - सोच में पड़ना
शंकालु - संदेह करने वाला
बेचैन – व्याकुल
मिष्टान्न - मिठाई
व्यंजन - तरह-तरह का भोजन

हरिहर काका के भाई जब शाम को काम करके खलियान से लौटे तब उन्हें सारी बात का पता चला की उनके पीछे घर में क्या-क्या हुआ है। सब कुछ जान कर पहले तो उन्होंने अपनी पत्नियों को बहुत डाँटा, फिर एक स्थान पर बैठकर सोच में पड़ गए। वैसे अभी तक गाँव के किसी व्यक्ति ने उनसे कुछ नहीं कहा था और न ही उन्हें अभी तक इस बात का पता था कि महंत जी ने हरिहर काका को क्या-क्या समझाया है। लेकिन इन सब के बाद भी उनका मन संदेह में पड़ गया और व्याकुल हो गया। क्योंकि उनको इस बात का पता था की बहुत सी बातों की जानकारी लोगों को बिना बताए ही हो जाती है।
शाम के ज्यादा गहरे होते-होते हरिहर काका के तीनो भाई हरिहर काका को घर वापिस लेने के लिए देव-स्थान पहुँच गए। उन्होंने हरिहर काका को घर चलने के लिए कहा और इससे पहले हरिहर काका कुछ बोलते महंत जी बीच में ही बोल पड़े कि आज हरिहर काका को देव-स्थान में ही रहने दिया जाए क्योंकि हरिहर काका अभी कुछ दिल पहले ही बीमारी से ठीक हुए हैं और उनका मन भी शांत नहीं है। अगर हरिहर काका भगवान के पास कुछ समय बिताएँगे तो उन्हें अच्छा लगेगा।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

महंत के ये कहने पर भी कि आज हरिहर काका को देव-स्थान में ही रहने दो, उनके भाई उन्हें घर ले चलने की ज़िद करने लगे। इस पर देव-स्थान के सभी साधु-संत हरिहर काका के भाइयों को समझाने लग गए। वहाँ पर उपस्थित गाँव के लोग भी उन्हें कहने लगे कि अगर एक रात हरिहर काका देव-स्थान पर रहेंगे तो कुछ नहीं होगा । इसके कारण हरिहर काका के भाइयों को निराश हो कर वापिस अपने घर जाना पड़ा । देव-स्थान में रात के खाने के लिए हरिहर काका को जो खाना दिया गया, वैसी मिठाई और तरह-तरह का भोजन उन्होंने कभी नहीं खाए थे । घी टपकते मालपुए, रस बुनिया, लड्डू, छेने की तरकारी, दही, खीर और भी न जाने क्या-क्या। पुजारी जी ने स्वयं अपने हाथों से हरिहर काका को खाना परोसा था। पास में बैठे महंत जी धर्म चर्चा करते हुए हरिहर काका के मन में शांति पहुँचा रहे थे। एक ही रात में हरिहर काका ने देव-स्थान में जो सुख-शांति और संतोष पा लिया था, वह उन्होंने अपने अब तक के पूरे जीवन में हासिल नहीं किया था।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

12.इधर तीनों भाई रात-भर----------श्रद्धा के भाव निरंतर बढ़ते ही जा रहे थे।

भावी आशंका - भविष्य की चिंता
मथना - बार-बार सोचना
पसीज़ - मन में दया का भाव जागना
याचना - माँगना
आवभगत - सत्कार
मुस्तैद - कमर कस कर तैयार रहना
श्रद्धा - आदरपूर्ण आस्था या विश्वास
निरंतर - लगातार

जब हरिहर काका देव-स्थान में ही रुक गए तो रात-भर उनके तीनों भाइयों को नींद नहीं आई। उनके भविष्य की चिंता उनके मन में बार-बार आती रही। वे सोचते रहे कि पंद्रह बीघे खेत, जिसकी जमीन गाँव की सबसे अधिक उपजाऊ जमीन है और लगभग दो लाख से ज्यादा की संपत्ति अगर उनके हाथ से निकाल गई तो वे क्या करेंगे । सुबह होते ही हरिहर काका के तीनों भाई फिर से देव-स्थान पहुँच गए। तीनों हरिहर काका के पाँव में गिर कर रोने लगे और अपनी पत्नियों की गलती की माफ़ी माँगने लगे और कहने लगे की वे अपनी पत्नियों को उनके साथ किए गए इस तरह के व्यवहार की सज़ा देंगे। वे हरिहर काका के सामने खून के रिश्ते की बात करने लगे। हरिहर काका के मन में दया का भाव जाग गया और वे फिर से घर वापिस लौट कर आ गए।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

जब अपने भाइयों के समझाने के बाद हरिहर काका घर वापिस आए तो घर में और घर वालों के व्यवहार में आए बदलाव को देख कर उन्हें बहुत ही सुख देने वाली भावना महसूस हुई। घर के सभी छोटे-बड़े लोग हरिहर काका का आदर-सत्कार करने लगे। तीनों भाइयों की पत्नियों ने हरिहर काका के पैरों में अपना माथा रख कर अपने व्यवहार के लिए माफ़ी माँगी। फिर तो जो सत्कार और खातिरदारी हरिहर काका की होने लगी, वैसी तो बहुतों के घर में मेहमानों की भी नहीं होती। जो भी हरिहर काका को पसंद होता, दोनों समय वही खाना बनाया जाता। तीन भाइयों की पत्नियाँ और उनकी दो बहुएँ- सभी पाँचों महिलाएँ हरिहर काका की सेवा में कमर कस कर हमेशा तैयार रहती थी। हरिहर काका आराम से बरामदे में पड़े रहते थे। उन्हें जिस किसी चीज़ की जरूरत होती वे सिर्फ आवाज देते सब कुछ उनके सामने लाया जाता। वे यह समझ गए थे कि ये सब महंत जी के कारण ही हो रहा है, इसीलिए महंत जी के लिए उनके मन में आदर पूर्ण आस्था और विश्वास लगातार बढ़ता ही जा रहा था।

13.बहुत बार ऐसा होता है कि----------कुछ घटित होने की प्रतीक्षा करने लगे थे।

तथ्य - वास्तविक घटना
वाकिफ - परिचित
अवगत - जाना हुआ
कीर्ति - प्रसिद्धि / ख्याति
अचल – गतिहीन

समाधान - उपाय
प्रत्यक्ष - जो सामने दिखाई दे
परोक्ष - जो सामने दिखाई न दे
हिमायती - तरफदारी करने वाला / पक्षपाती

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow